# मौसम, बहुत खराब है

प्रफुल्ल कोलख्यान

मौसम, बहुत खराब है, तुम न आये, न सही, तुम्हारा ख्याल तो है।

पाँव फैलाने के लिए चादर न सही, मुँह ढकने के लिए रुमाल तो है!

तुम न सही, गुंडों के इस शहर में, आखिर कोई एक कोतवाल तो है।

दाल न सही, नमक तो है, दिशाएँ गुमसुम हैं, मगर दिकपाल तो है!

लोग पूछेंगे, तुम्हारे आँसुओं की कीमत बाजार में ये सवाल तो है।

हाँ, ऊपर-ऊपर हरियाली, मगर भीतर में पक रहा बबाल तो है!

ये बाजार में कोहराम हो चाहे जितना, मगर वह मालामाल तो है।

असली न सही, नकली ही सही जो भी हो, बाजार में उछाल तो है!

मौसम, बहुत खराब है, तुम न आये, न सही, तुम्हारा ख्याल तो है।

पाँव फैलाने के लिए चादर न सही, मुँह ढकने के लिए रुमाल तो है!